NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

बागवानी : मई - जून में किये जाने वाले कार्य

राधा*, डॉ. विजय चंद्र** एवं डॉ. अतुल यादव***

पपीता:-

मई में बाग का रेखांकन करने के बाद गड्ढे भरने का कार्य समाप्त कर लेना चाहिए। पछेती किस्मों के तैयार फलों को बाजार भेजने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। नर्सरी में लगे छोटे-छोटे पौधों को गर्मी से सुरक्षा की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। अतः नर्सरी पर छप्पर डाल दिया जाए तो अच्छा रहताहै। नर्सरी के पौधों की साप्ताहिक अंतर पर सिचाई की नियमित व्यवस्था आवश्यक है। बाग में लगे पौधे को तीन तर फसे घास या पुआल से ढक दिया जाए तो अच्छा रहता है। जून के महीने में नर्सरी पौधों को निकालकर बाग में रोपित कर देना चाहिए एवं उसके तुरंत बाद सिंचाई करना अति आवश्यक है। पुराने बागों की बजाय नये बागों में पानी की अधिक आवश्यकता होती है।

अनार :-

उत्तर-पश्चिमी भारत के शुष्क क्षेत्रों में, जहां सिंचाई के सीमित संसाधन उपलब्ध हैं, उन क्षेत्रों में मृग बहार पसंद की जाती है। जब कि महाराष्ट्र के सिंचाई क्षेत्रों में अम्बेबहार को पसंद किया जाता है। मृग बहार वाले क्षेत्रों में अप्रैल-मई माह से ही खेतों में सिंचाई रोक दी जाती है। सिंचाई रोकने के 45 दिनों के बाद पौधों की हल्की छँटाई करनी चाहिए। छँटाई के तुरंत पश्चात, उर्वरकों की संस्तुत खुराक और सिंचाई शुरू कर देनी चाहिए। सामान्यतः, अना र के पौधों में 10-15 किग्रा गोबर की सड़ी खाद 250 ग्राम नाइट्रोजन 125 ग्राम फॉस्फोरस एवं 125 ग्राम पोटेशियम प्रतिवर्ष प्रति वृक्ष देना चाहिए। खाद एवं उर्वर कों का उपयोग पौधों के छत्रक के नीचे चारों ओर 8-10 सेंमी गहरी खाई बनाकर देना चाहिए। यह पुष्पण और फलन की अभिवृद्धि करता है। वैकल्पिक रूप से सिंचाई रोकने के 45 दिन बाद, पत्तियों को गिराने के लिए ईथरेल 1000 पीपीएम, प्रोफेनोफॉस 2 मिली. प्रतिलीटर, मेटासिड 2 मिली. प्रतिलीटर, थायोयूरिया 3 ग्राम प्रति लीटर या यूरियाफॉस्फेट 5 ग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें। तेलिया रोग से संक्रमित क्षेत्रों में मृग बहार नहीं लिया जाना चाहिए अन्यथा मई के तीसरे सप्ताह से जून के आखिरी सप्ताह एवं इसके बाद भी रासायनिक जैवनाशियों का प्रति सप्ताह प्रयोग करें। जून माह से ही

राधा*, डॉ. विजय चंद्र एवं डॉ. अतुल यादव*****
*पीएच.डी. शोध छात्रा , फल विज्ञान, विभाग
**सह - प्राध्यापक (कृषि विज्ञान केन्द्र) पशु विज्ञान विभाग, एवं
***सहायक प्राध्यापक फल विज्ञान, विभाग
आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, 224 229 (यूपी)

फल बंधक कीट का प्रकोप भी बढ़ जाता है। इस से बचाव हेतु फलों को थैलियों से ढंक दें तथा एजाडिरेक्टिन 1500 पीपीएम (3 मिलीप्रतिलीटर) का छिड़काव करें। मृदा का सौरीकरण मई-जून की द्विमाही में कर लेना चाहिए, जिस से हानिकारक कीट फफूंद एवं खरपतवार के बीज नष्ट हो जाएँ। मानसून के दौरान अनार के नए बाग लगाने हेतु, रेखांकन एवं गड्ढे खोदने का कार्य भी मई-जून माह में ही पूर्ण कर लेना चाहिए। सामान्यतः 4-5 मीटर की दूरी पर अनार का रोपण किया जाता है। पौध रोपण के एक माहपूर्व 60 x 60 x 60 सेंमी आकार के गड्ढे खोदकर 15 दिनों के लिए खुला छोड़ दें। तत्पश्चात गड्ढे की ऊपरी मिट्टी में 10-15 किग्रा गोबर की सड़ी खाद, 1 किग्रा. सिंगल सुपरफॉस्फेट, 50 ग्राम क्लोरो पायरी फास चूर्ण मिट्टी में मिला कर गड्ढों को सतह से 15 सेंमी ऊंचाई तक भर दें। गड्ढे भरने के बाद सिंचाई करें ताकि मिट्टी भली-भांति बैठ जाए।

आम :-

मानसून के आगमन से पूर्व, नए बाग लगाने के लिए मई माह में उचित दूरी पर बाग के रेखांकन (निशानलगाने) के बाद गड्ढे खोद लेने का कार्य पूरा कर लेना चाहिए। नर्सरी में बीजू पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए एवं खर पतवार निकाल देने चाहिए। पकते हुए फलों का पक्षियों आदि से बचाव करना चाहिए। फलों की आंतरिक सड़न रोकने के लिए बोरेक्स (4 किग्रा../ 100 लीटर) का छिड़काव करना चाहिए। फल मक्खी के प्रकोप से फलों को बचाने के लिए मिथाइलयूजीनॉल (0.1 प्रतिशत) एवंमैलथिऑन (0.1 प्रतिशत) के रासायनिक पाश का प्रयोग करें। कैंकर व्याधि से बचाव हेतु स्ट्रेप्टोमाइसिन (200 पीपीएम का छिड़काव करें। फलों की अच्छी बढ़वार के लिए आवश्यकतानुसार 8-10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें जून में नीचे गिरे फलों को इकट्ठा कर लेना चाहिए तथा इन्हें स्थानीय बाजारों में भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए । पेड़ों के नीचे की जमीन साफ-सुथरी रखनी चाहिए और यदि अगेती किस्म के फल पक गए हों तो उन्हें तोड़कर बाजार भेजने की उचित व्यवस्था करें। फलों की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु तुड़ाई के तुरंत बाद फलों की डीसैपिंग(डंठल से होने वाले स्राव को पृथक करना) आवश्यक है। फलों को तोड़ते समय 10 मिमी की शाखा के साथ उन्हें प्रातः या सायं काल में ही तोड़ना चाहिए। बौनी किस्मों में फसल की तुड़ाई सिकेटियर द्वारा तथा ओजस्वी किस्मों में 'मैंगोहार्वेस्टर का उपयोग करना चाहिए । तुड़ाई के दौरान विभिन्न किस्मों के फलों को एक साथ मिश्रित नहीं करना चाहिए। किस्मवार फलों का श्रेणी करण करना चाहिए.जिस से बाजार में फलों का उचित मूल्य प्राप्त हो सके। तुड़ाई उपरांत होने वाले रोगों तथा फलों को एक समान रूप से पकाने के लिए कार्वेण्डाजिम (0.5 ग्रामप्रतिलीटर) और ईथरेल (700 पीपीएम) के घोल को गुन गुने पानी (52° डिग्री सेल्सियस) में तैयार कर फलों को 5 मिनट के लिए उपचारित करें।

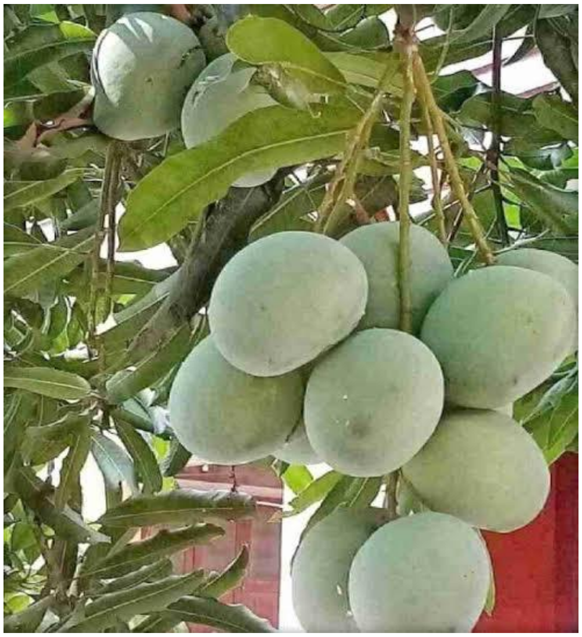

अवस्था से फलों की तुड़ाई तक करने पर भी फलों के फटने (चटकने) की समस्या काफी कम हो जाती है। माईट के प्रकोप को कम करने हेतु डाइमिथोएट (100 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) छिड़काव लाभकारी रहता है। लीची में गुटी बांधने का कार्य जून के दूसरे पखवाड़े में करें। इसमें मिली बग की रोकथाम के लिए थालों में 2 प्रतिशत कीटनाशी धूली डाल कर गुड़ाई कर दें।

लीची :-

मई में पौधों की 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए ताकि फलों में नियमित वृद्धि होती रहे। अन्य फलों की भांति लीची बाग का रेखांकन भी मई माह में ही कर लेना चाहिए। रेखांकन उपरांत, 3 x 3 x 3 फुट आकार के गड्ढे खोद लें व उन्हें एक महीने बाद गोबर की खाद, रासायनिक खाद व मिट्टी की बराबर मात्रा से भर लेना चाहिए। कुछ किस्मों के फल मई में पकना शुरू हो जाते हैं उन्हें बरों से बचाना चाहिए। तैयार फलों को सुबह या शाम को तोड़कर भेजने की समुचित व्यवस्था आवश्यक है। फलों के पकने के समय उनके फटने की समस्या लीची में अत्यधिक है। पौधे में नियमित सिंचाई करते रहना चाहिए अन्यथा मई व जून के महीनों में अचानक वर्षा होने या सिंचाई करने से फलों के फटने की अत्यधिक समस्या आएगी। यदि फिर भी फल फटें तो पौधों पर समयानुसार जिब्रेलिकअम्ल (4 ग्राम प्रति 100 लीटर पानीमें) के घोल का छिड़काव काफी लाभदायक रहता है। जिंक सल्फेट के 1.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर फल की निंबोली

अंगूर :-

नई बेलों में सिंचाई 10-15 दिनों के अंतराल पर करते रहना चाहिए। मई के अंत तक तैयार परलेट और ब्यूटीसीडलैस किस्मों के तैयार गुच्छों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए तथा जब किस्में पकनी आरंभ हो गई हों तो उनमें सिंचाई बंद कर देनी चाहिए, अन्यथा फलों में ठोस घुलनशील पदार्थों की अत्यधिक कमी आती है एवं फल फटने लगते हैं। ऐसे फलों को बाजार में बेचना कठिन होता है। यदि एन्थ्रेक्नोज (श्यामव्रण) का प्रकोप हो तो बाविस्टिन (0.2 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार करना चाहिए। चूर्णिल फफूंद की रोकथाम के लिए केराथेन (0.1 प्रतिशत), डीनोकैप (0.25 मिली / लीटर)

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

के घोल का छिड़काव अथवा सल्फर की धूल का प्रयोग करना चाहिए। इन महीनों में थ्रिप्स का भी प्रकोप कहीं-कहीं रहता है। इसकी रोकथाम के लिए मैलाथियान के 500 मि .ली.प्रति 500 लीटर पानी में घोल का छिड़काव करना चाहिए। जून माह में, मृदुल आसिता से बचाव हेतु मुख्य तने के समीप से निकलने वाली सभी शाखाओं को निकाल देना चाहिए तथा ट्रेलिस से लटकने वाली अतिरिक्त शाखाओं को सुतली से बांध देना चाहिए ताकि मिट्टी से उनका स्पर्श हो पाये। इसके अतिरिक्त बोड़ोंघोल (0.5 प्रतिशत) अथवा कॉपरऑक्सी क्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर) का छिड़काव करें। तुड़ाई से 8-10 दिनों पूर्व 50-100 पी पी एम नेप्थलीनएसिटिकएसिड के छिड़काव से फलों का गिरना कम हो जाता है तथा निधानी जीवन में भी बढ़ोत्तरी देखी गयी है।

केले प्रवर्धकों का सही चुनाव, धूप से करें उनका बचाव :-

मई में भी एक सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। अवांछित पत्तियों को निकाल देना चाहिए। फलों के गुच्छों को धूप सेब चाने के लिए पत्तियों से ढक देना चाहिए। नए बाग लगाने के लिए रेखांकन के पश्चात 45 x 45 x 45 सेंमी. आकार के गड्ढ़े खोद लेने चाहिए। जून के अंतिम सप्ताह में खोदेगए गड्ढे को गोबर की खाद, उर्वरक व मृदा बराबर मात्र में मिलाकर ऊपर तक भरें। नीम की खली (250 ग्राम प्रति गड्ढा तथा स्यूडोमोनास (25 ग्राम) सूक्ष्मजीवियों का प्रयोग भी लाभदायी होता है। गड्ढों में मिट्टी भरने के तुरंत बाद पानी अवश्य देना चाहिए ताकि मृदा बैठ जाए। पुराने बागों में के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि गर्मियों में जिन पत्तियों पर धब्बे वाला रोग दिखे, उन्हें काट कर मृदा में गहरा दबा दें या जला दें तथा कवकनाशी ब्लिटाक्स 50 का 0.3 प्रतिशत (300 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उकठा रोग की रोकथाम के लिए कंदों को एग्नॉल से उपचारित करें। यह समय केला की रोपाई के लिए उपयुक्त होता है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा स्वस्थ व रोगमुक्त पत्ती वाली अधोभूस्तारियों (स्वोर्डसकर्स) का ही प्रयोग करें। चौड़ी पत्तियों वाले अधोभूस्तारी (वॉटरसकर्स) देखने में तो मजबूत लगते हैं लेकिन आन्तरिक रूप से ये कमजोर होते हैं। अतः, प्रवर्धन हेतु इनका प्रयोग वर्जित है। रोपण के समय कन्द का औसत वजन लग भग एक से डेढ़ किलो ग्राम होना चाहिए । रोपण पूर्व पत्तियों को ऊपरी तने के कन्द से 25-30 सेंमी. पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पत्तियों को (एक ग्राम बाविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में) उपचारितकर लें। रोपाई के समय केवल कन्द भाग को हो मिट्टी में दबाएं तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें। इसके अतिरिक्त, खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखने के लिए थालों में धान के पुआल अथवा गन्ने की पत्ती की 8 से 10 सेंमी. मोटी पर्त बिछानी चाहिए। इससे खरपतवार की वृद्धि रुकती है तथा सिंचाई की आवश्यकता भी कम हो जाती है। जैविक पलवारों के अपघटन से भूमि की

उर्वराशक्ति भी बढ़ जाती है जिससे उपज में भी वृद्धि होती है।

चीकू:-

मई के महीने में जब कड़ी धूप हो, बगीचे की गहरी जुताई करें। लगभग 15 दिनों तक बगीचे की खाली जगह में धूप आने दें। ऐसा करने से कीटों के अंडे नष्ट हो जाएंगे तथा बाग में ज्यादा कीटनाशियों छिड़काव से बचा जा सकेगा। इस समय बाग में सिंचाई बिलकुल न करें। नए बाग लगाने हेतु 60 x 60 x 60 सेंमी या 100 x 100 x 100 सेंमी आकार के गड्ढे क्रमश: 9 x 9 (बलुई मृदा में) अथवा 10 x10 मीटर (भारी मृदागड्ढों को सतही मृदा, 50 किलो ग्राम गोबर की खाद 1 किलो ग्राम सुपरफॉस्फेट और 1 किलो ग्राम नीम खली से भरें। नए बाग लगाते समयमानकीकृत किस्में लगाएँ। स्थापित बागों में 5-7 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। इस दौरान गुड़ाई करने से मृदा की नमी संरक्षित करने में भी सहायता मिलती है। बाग में मैग्नीशियम, सल्फर, बोरॉन, लौह, जिंक तत्वों की पूर्ति के लिए क्रमशः । प्रतिशत मैग्नीशियमनाइट्रेट, 1 प्रतिशत कैल्शियमसल्फेट, बोरक्स (5 किलो प्रति हैक्टर), फेरससल्फेट (0.5 प्रतिशत) व जिंकसल्फेट (0.5 प्रतिशत) डालें। बाग में नाइट्रोजन, पोटेशियम और फॉस्फोरस के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों की मिट्टी में कमी के प्रति सजग रहें। किसी भी खाद को डालने से पहले मिट्टी की जांच निकटतम संस्था से अवश्य करवाएं और जरूरत के अनुसार ही प्रयोग करें। भारत सरकार द्वारा विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों, राज्य सरकारों के अंतर्गत मृदा प्रयोगशालाओं में, मृदा की जांच कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड (सॉइल हेल्थकार्ड) बनाए जा रहे हैं। फरवरी –मार्च में विकसित फूलों से फल मई- जून के दौरान तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। जब फलों का रंग (नारंगी या आलू जैसा रंग) फीका पड़ जाए अथवा फलों से चिपचिपा दूधिया स्राव कम हो जाए और पेड़ों से आसानी से टूट जाए तो समझ लेना चाहिए कि फल तुड़ाई के लिए तैयार हैं। तुड़ाई पश्चात फलों का छोटे, झोले और बड़े आकार के आधार पर श्रेणीकरण करें। भंडारण से पूर्व जिबरेलिकअम्ल (300 पी पी एम) अथवा कार्बेण्डाजिम (1000 पी पी एम) से उपचार लाभदायी रहता हैं।

खजूरः-

नए बाग लगाने के लिए गड्ढे जून में खोदते हैं तथा गड्ढ़े की दूरी किस्म के अनुसार 6-8 मीटर रखते हैं। फल सेट होने के बाद मई माह में, गुच्छों के मुख्य डंठल को नीचे की ओर मोड़ देते हैं ताकि ये बिना पत्तियों के मध्यशिरा को छुए नीचे लटकती रहें। इस से बढ़ते फलों के वजन से डंठल के टूटने का खतरा कम होता है और साथ ही पत्तियों के मध्यशिरा की रगड़ से फलों को होने वाला नुकसान भी कम होता है। मई के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक फलों के विरलीकरण का कार्य भी पूरा कर लेना चाहिए। यह आमतौर पर या तो एक गुच्छे पर लगे फलों की संख्या को कम कर या कुछ गुच्छों को हटाने के द्वारा पूरा किया जाता है। पौधे की उम्र तथा किस्म के आधार पर, प्रति पौध 5 से 10 गुच्छों या 1300 और 1600 फलों को बनाए रखा जाना चाहिए। इसके पश्चात, प्रत्येक गुच्छे के केंद्र से एक तिहाई फलों को काटकर अलग कर देना चाहिए जिससे फल जल्दी पकते हैं तथा उनकी गुणवत्ता में भी सुधार होता है। फलों की छँटाई अथवा विरलीकरण की तीव्रता खद्रावी किस्म में 40-50 प्रतिशत, जैदीऔरबर ही में 50-60 प्रतिशत तथा हलावो किस्म में 50-55 प्रतिशत तक होनी चाहिए। मई-जून माह के दौरान, बागों में सिंचाई की नियमित रूप से व्यवस्था होनी चाहिए। जून के अंत से फल डोका अवस्था में आने लगते हैं, अतः उन्हे जैव निम्नीकरणीय प्लास्टिक की चादरों से ढक देना चाहिए, ताकि संभावित वर्षा से होने वाले नुकसान से फलों को बचाया जा सके। पक्षियों से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए, फलों को लोहे की जालियों से भी ढकते हैं। जून के तीसरे से चौथे सप्ताह में अगेती प्रजातियों जैसे नागल, मस्कट, तायर, सायर, हलावी खूनैजी में तुड़ाई प्रारम्भ कर सकते हैं। इनमें अधिकांशतः फल डोका अवस्था में पहुँच जाते हैं। इन फलों को ताजे फलों के रूप में या प्रसंस्करण के बाद छुहारा बनाने में प्रयोग में लाया जा सकता है।

अलूचा :-

ग्रीष्म ऋतु आते ही अलूचा में खरपतवारों का प्रकोप बढ़ जाता है अतः समय-समय पर इन्हें निकाल देना चाहिए। अलूचे के वृक्षों के समुचित विकास के लिए अलूचे के वृक्षों के समुचित विकास के लिए मई-जून में एक सप्ताह के अंतराल पर नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए। जिन जगहों पर सिंचाई की उचित व्यवस्थान हो वहां पेड़ों केनी चेपल वार (मल्च) बिछा देनी चाहिए। इसके अन्य लाभ भी हैं, जैसे इस के प्रयोग से खरपतवार का उगना कम हो जाता है। यह मृदा के तापक्रम को भी ठीक रखता है साथ ही अच्छी गुणवत्ता के फल भी प्राप्त होते हैं। गर्मी के दिनों में पेड़ों को तेज धूप के हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए मुख्यत नीलेथोथे के घोल काले कर देना चाहिए। अलूचे की किस्मों ब्यूटी, सांतारोजा और मैथिली में अधिक फल लगते हैं एवं पेड़ों की शाखा फलों का भार न सह सकने के कारण टूट भी जाती हैं।

इसके लिए बांस याम जबूत लकड़ी का सहारा देना चाहिए। जापानी अलूचा की लगभग सारी किस्मों में बहुत फल लगते हैं। यदि सभी फलों को पेड़ों पर छोड़ दिया जाए तो फल छोटे आकार के होते हैं। अतः फलों की छंटाई कर देनी चाहिए। फलों की छंटाई हाथ से करें। नेपथालोन एसिटिक एसिडअम्ल 50 पी.पी.एम. (50 ग्राम प्रति 100 लीटर पानीमें) का छिड़काव करें। पौधों की वृद्धि के लिए नाइट्रोजन की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। अत: 0.5 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव फूलों की पंखुड़ियों के झड़ने से लेकर फलों के पकने के 2 सप्ताह पहले तक किया जा सकता है। जिंक और लौह तत्व की कमी कीपूर्ति के लिए 0.5 प्रतिशत जिंकसल्फेट और फेरससल्फेट के घोल का पर्णीय छिड़काव किया जा सकता हैं। चिड़ियों से फलों की रक्षा करनी चाहिए तथा यदि पत्ती खाने वाले कीट का प्रकोप हो तो इंडोक्साकार्बके 0.07 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

बेर के बागान को कटाई- छँटाई, उर्वरण व सिंचाई:-

देश के उत्तरी और पश्चिमी भागों में कटाई – छंटाई का काम मई-जून (वैशाख-ज्येष्ठ) का महीना, जब पौधों की अधिकांश पत्तियां झड़ चुकी होती हैं तथा पेड़ सुषुप्तावस्था में हों, सबसे उपयुक्त माना जाते हैं। छोटे पौधों में 60-90 सेंमी. तक की ऊंचाई तक तने पर निकलने वाली शाखाओं को काट देना चाहिए और किसी लकड़ी अथवा बांस के सहारे सीधा करना चाहिए। बड़े वृक्षों की चटकी, टूटी और जमीन को छूती शाखाओं को छांट देना चाहिए। एक दूसरे से मिली हुई शाखाओं को भी काट देना चाहिए। छंटाई का कार्य जहां तक संभव हो सके मई में पूरा कर लेना चाहिए। कटाई-छंटाई करते समय, सामान्यतः पिछले वर्ष की शाखाओं का 50 प्रतिशत भाग काट देते हैं। तृतीय शाखाओं को पूर्ण रूप से एंव द्वितीय शाखाओं की 15-20 कलियां काट देने पर मजबूत एंव ओजस्वी शाखाएं निकलती हैं। बीमारियों के प्रकोप से बचाव के लिए शाखाओं के कटं हुए स्थानों पर फफूंदीनाशी (नीलाथोथा या ब्लाइटॉक्स- 50) का लेप कर देना चाहिए। काट-छांट के लिए तेज धार वाले औजार का प्रयोग करना चाहिए ताकि शाखा क्षतिग्रस्तन हो। जून अत्यधिक गर्म रहता है। पेड़ों में जब तक फुटावन हो तब तक सिंचाई नहीं करनी चाहिए। जिन वृक्षों में छंटाई का कार्य रह गया हो, उन में जून के प्रथम सप्ताह तक यह कार्य पूरा कर लेना चाहिए। छंटाई के पश्चात कटी हुई लकड़ियों और शाखाओं को हटाकर साफ करना चाहिए। गर्मी में एक-दो बार पेड़ों के नीचे जुताई कर देने पर हानिकारक कीड़े-मकोड़ों के अंडे तथा प्यूपे नष्ट हो जाते हैं। पौधों के मुख्य तनों के चारों ओर 60 सेंमी. तक की दूरी का घेरा छोड़कर पेड़ का बाहरी घेरा बनाया जा सकता है तथा इसको पानी में नाली से जोड़ देना चाहिए। बेर में एक साल के पौधे के लिए 5 किग्रा गोबर / कम्पोस्ट खाद, 50 ग्रामनाइट्रोजन

50 ग्रामफॉस्फेट व 25 ग्रामपोटाश तथा यही मात्रा क्रमशः बढ़ाकर 8 या उससे अधिक उम्रके पौधे के लिए 40 किग्रा गोबर की खाद, 400 ग्रामनाइट्रोजन, 400 ग्रामफास्फेट व 200 ग्राम पोटाश प्रति पौधे की दर से प्रयोग करें।